सं ओ वि /रोहतक/224-83/6431 I. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं जाल प्रा० लि०, सुभाष रोड-ए वलेपारने ईस्ट बम्बई-400057 के श्रमिक श्री बी. के. गरोवर तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखिन मामले में कोई औद्योगिक विवाद है;

अरेर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब, श्रौबोगिक विवाद श्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रधिसूचना सं. 3864-एइएस श्रो (ई) श्रम-70/13648, दिनांक 8 मई/ 1970 द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नोचे निवा मामला न्यायालयं हतु निविष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री बी. के. गरोवर की सेवाओं का समापन न्यायोचिंग तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं ओ.वि./एफ.डी./170-83/64318.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैसर्ज ऊंषा रेक्टीकायर कारपोरेशन इण्डिया प्रा० लि०, मधुरा रोड, फरीदाबाद के श्रमिक श्री जोगिन्द्र सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीडोगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415—3—श्रम—68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़तें हुए श्रिधसूचना सं. 11495—जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरो, 1958 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदावाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री जोगिन्द्र सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहर्त का हकदार है ?

सं. म्रो.वि./एफ.डी./160-83/64325.-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. चेतन गैट्य एंड कम्पनी, लि०, 14/6, मथुरा रोड, फरीदाबाद के श्रमिक श्री मान सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, भोद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं० 11495-जी-र्श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के धामीन गठित श्रम न्यायालय, करीदाबाद, को विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:---

क्या श्री मान सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० म्रो.वि./रोहतक/217-83/64332.--चू कि हिस्साणा के राज्यशाल की राय है कि मैसर्ज वलजीत पेकरज प्रा० लि०, एम.ग्रंहि० ई०, वहादुरगढ़ (रोहतक) के श्रमिक श्री वलजीत सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद हैं ;

श्रीर चूकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इसलिए, श्रव, ओद्यौगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा श्रधान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं० 9641−1 श्रम •-

70/32573, दिनांक 6-11-1970 के साथ पठित सरकारी घ्रधिसूचना सं० 3864-ए.एस.घो.(ई)-श्रम-70/13648, दिनांक 8-5-1970 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा गृं 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादमस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादमस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या संबन्धित मामला है: -

क्या श्री वलजीत सिंह की सेवाझों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भी वि./जी जी .एन./127-83/64339. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. मारुति उद्योग लि॰ गुड़गावां के श्रमिक श्री पारत नाथ तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है ;

भ्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, प्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिष्ठिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रिष्ठसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रष्ठिसूचना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रष्ठिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवाद ग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री पारस नाथ की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं ग्रौ.वि./जी.जी.एन./126-83/64346.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं व मारुति उद्योग लिव, गुड़ गांवा के श्रीमिक श्री छोटे लाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है ;

भीर चं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रियित्यम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदोन की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्य गल, इसके द्वारा सरकारी ग्रियित्वना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रियित्वना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरत्ररी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिवित्यम की धारा 7 के ग्रियीन गठित श्रम, न्यायालय फरीदाबाद, को विश्वादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायानिगंब के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री छोटे लाल की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. म्रो. वि./रोहतक/2 20-83/64353.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० ए० के० इण्डस्ट्रीज, मार्डन इण्डस्ट्रीयल इस्टेट, बहादुरगढ़, (रोहतक) के श्रीमक श्री रामा गुन्ता तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 9641—I—श्रम—70/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिसूचना सं. 3864—ए एस ओ (ई) श्रम—70/13648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री रामा गुप्ता की सेवाध्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो वि./जी.जी.एन./125-83/64360.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० मारुति उद्योग लि० गुड़गावा के श्रमिक श्री परमेश्वर शर्मा तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मानले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है; श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल, विवाद की त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, मब, श्रोद्यौगिक विवाद ग्रीविनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रीविस्चना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रविस्चना सं० 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक) 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त ग्रीविन्यम की धारा 7 के ग्रीवीन गठित श्रम न्यायालय, फरीशबाद को विवादगस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जोकि उक्त प्रवन्त को तथा श्रीम के बीच या तो विवादगस्त मामना है या विवाद से सुसंगत भाषना संबंधित मामला है :—

क्या श्री परमे स्वर शर्मा की सेवाओं का समापन त्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० म्रो.वि./एफ.डी/248-83/64367.—चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैसर्ज मुख्य प्रशासक फरीदाबाद कम्पलैक्स, एन. ग्राई. टी., फरीदाबाद, के श्रामिक श्रीदारका नाय तथा उनके प्रबन्धकों के मध्य इतरें इतके बाद जिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिवितयम, 1947 की बारा 10 की उपद्वारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त श्रिवितयम की धारा 7क के श्रवीन श्रौद्योगिक श्रिविक करण, हरियाणा, फरीदावाद को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रीमक तथा प्रवन्धकों के मध्य 'न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री द्वारका नार्थ की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

ं सं भी विव /जी.जी.एन./130-83/64374. — चूं कि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैं व चन्द्र नगर केमीकल्ज एण्ड -मिनरल प्रा विव नगर, गुड़गांवा के श्रमिक श्री स्वरू नाथ तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई भौद्योगिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की घारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विद्रादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत प्रयवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री स्वस्त्र नाथ की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राह्त का हकवार है ?

सं भोविव /जी.जी.एन./22-83/64381 - जूंकि राज्यसल, हरियाणा की राय है कि मैं वहरसा रोड लाईन्स दिल्ली रोड, गुड़गांवा के श्रीमक श्री महिल्द्र सिंह तथा उसके प्रवत्धकों के मध्य इसमें इसके बाद जिल्बित मामने के सम्बन्ध में कोई भौधोगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायितर्णय हेतु विदिश्ट करना वांछतीय समझते हैं;

इसलिए, घर, भौदोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपदारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रविस् चना सं० 5415-3-अन-68/ 15254, दिनोक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए, श्रिधसूचना सं० 11495-जी-अन/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, करीदाबाद, को विवादयस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा **अ**भिक के बीच या तो विवादसन्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री महिन्द्र सिंह की सेवाघों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं स्रो वि /जी,जी एन / 123-83/64388 -- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. परमजीत इन्जीनियरज , प्लाट नं • 182 दंडाहेड़ा गुड़गांवा के श्रमिक श्री राजन तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इ सलिए, ग्रव, श्रीद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम , 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पठित सरकारी श्रीधसूचना सं. 11495जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रीधिनियम की धारा 7 के श्रीधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री राजन की सवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं भी वि/जी जी एन./131/83/64395. —चूंकि हरियाणां के राज्यपाल की राय है कि मैसर्ज चन्द्र नगर केमीकल्ज एण्ड मिनरल प्रा० लिं० चन्द्र नगर, गुड़गांवा के श्रमिक श्री हीरा लाल तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधिसूचना हैंसं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक है 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रीधिनयम की घारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनण्य हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री हीरा लाल की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

वी एस चौधरी,

उप-सचिव, हरियाणा सरकार, श्रम विभाग।